यूनिट 2 खयाल तथा खयाल विधा के गीत

सूचीपत्र

2.0 **भूमिका**

2.1 **अधिगम के परिणाम**

2.2 **खयाल**

2.3 **ख्याल बंदिशों के प्रमुख रचयिता**

2.4 **खयाल गायकी के विख्यात गायक**

2.5 **खयाल शैली में गाए जानेवाले अन्य गीत**

2.6 **तराना**

2.7 **लक्षण गीत**

2.8 **सरगम गीत**

2.9 **याद रखने योग्य बातें**

2.0 भूमिका

भारतीय संगीत में प्रबन्धों या गीत-विधाओं के विभिन्न प्रकार समय-समय पर प्रचलित हुए। दसवीं शताब्दी के बाद से मध्य एशियायी देशों से उत्तर भारत पर बार बार आक्रमण होते रहे और कई विदेशी शासकों ने भारत पर शासन किया। ये सभी भारत में आ कर बस गए जिस वजह से यहाँ की संस्कृति पर मध्य एशियायी संस्कृति का प्रभाव पड़ने लगा। देखते देखते यहाँ की सरकारी भाषा जो संस्कृत थी वो धीरे धीरे अरबी और फारसी होने लगी। भारतीय मूल के लोग जो भी सल्तनत में काम करते थे उन्हें अरबी तथा फारसी भी सीखना पड़ा। विभिन्न क्षेत्रों में इन भाषाओं के मिश्रण से नए क्षेत्रीय भाषाओं का विकास होने लगा। भाषा के साथ साथ रहन सहन, रीति रिवाज, खान-पान, पहनावे और यहाँ तक की मनोरंजन के तौर तरीके भी बदलने लगे। अतः संगीत मे भी बदलाव आने लगे। प्राचीन समय में जो प्रबंध गायन का प्रचलन था वह 14वीं शताब्दी के आते आते ध्रुवपद गायन मे बदल गया; और सत्रहवीं शताब्दी मे एक और नए किस्म की गीत विधा का विकास होने लगा जिसे हम आज खयाल के नाम से जानते हैं। आधुनिक समय में खयाल की लोकप्रियता विदेशों तक फैली हुई है। इस यूनिट में हम इसी खयाल विधा तथा उस से से जुड़ी हुई अन्य गीत प्रकारों के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे।

अधिगम के परिणाम

इस अध्याय के पाठ के बाद विद्यार्थी –

- खयाल विधा की विशद जानकारी प्राप्त करेंगे
- खयाल की उत्पत्ति और विकास के संबंध में बता पाएंगे
- खयाल के विभिन्न भागों को समझा पाएंगे
- खयाल मे प्रयुक्त तालों का नाम बता पाएंगे .
- खयाल शैली के अन्य गीत प्रकारों को वर्णन कर पाएंगे

खयाल

खयाल या ख्याल हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक प्रमुख गीत विधा है। शाही और अभिजात वर्ग के संरक्षण के कारण पिछले दो शताब्दियों में यह विधा केवल समूचे भारत में ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी अपनी खास पहचान बनाने में सफलता प्राप्त कर चुकी है। पहले यह विधा केवल वंश परंपरागत संगीतज्ञों में ही सीमित था पर धीरे-धीरे संगीत में रुचि रखने वाले सामान्य जन भी गुरुओं से प्रशिक्षण प्राप्त कर पेशेवर कलाकार के रूप में प्रतिष्ठा पाने लगे।

अधिकतर इतिहासकारों के मत से उत्तर मध्यकालीन उत्तर भारत में मुगल सम्राटों के दरबारों में ही ख्याल का विकास हुआ। खयाल विधा के उत्पत्ति के बारे में विद्वानों मे कई मतभेद हैं। ऐसा माना जाता है कि भारतीय और फारसी संस्कृति के मेल से इस विधा का जन्म हुआ। कुछ विद्वानों के मतानुसार इस विधा के प्रवर्तक 13 वीं शताब्दी के विख्यात फारसी और हिन्दी के कवि और साहित्यकार अमीर खुसरो थे। कुछ विद्वान पंद्रहवीं शताब्दी के जौनपुर के सुल्तान हुसैन शाह शर्की को भी खयाल विधा के विकास में योगदान देने के लिए श्रेय देते हैं। और कुछ विद्वानों के मतानुसार मध्ययुगीन कव्वाली विधा से खयाल की उत्पत्ति हुई है। कुछ और विद्वान इसे प्राचीन साधारणी गीति का परिवर्तित रूप मानते हैं। लिखित प्रमाणों के आधार पर अमीर खुसरो को खयाल का प्रवर्तक नहीं माना जा सकता क्योंकि न तो उनके लिखी हुई साहित्य में और न ही उनके समकालीन संस्कृत साहित्यों में इस विधा का उल्लेख मिलता है। पन्द्रहवीं शताब्दी के जौनपुर के शासक सुल्तान हुसैन शाह शरकी के लिए यह माना जाता है कि उनके प्रोत्साहन से क्षेत्रीय भाषा में लिखी गई दो तुक का एक गीत प्रकार चुटकिला या चुटकुला का प्रवर्तन हुआ था और यही बाद में खयाल के रूप मे परिशोधित होकर प्रचलन मे आया। परंतु इस बात पर अभी काफी शोध करना होगा तभी यह तथ्य प्रतिष्ठित हो पाएगी। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिखा गया 'संगीत पारिजात' ग्रंथ में भी खयाल विधा का नामोलेख मात्र नहीं है। अतः लिखित प्रमाण के आधार पर खयाल विधा का प्रचलन सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम भाग से ही माना जाना उचित होगा। कव्वाली विधा से इसकी उत्पत्ति हुई होगी ऐसी मान्यता के पीछे कई कारण हो सकते हैं। पहला, कव्वाली में गाए जानेवाले कुछ गीतों को खयाल के बंदिशों के रूप में गाया जाना; दूसरा, कव्वाली में प्रयुक्त कुछ तालों का ख्यालों में भी प्रयुक्त होना, तीसरा कव्वाल बच्चों का घराने से खयाल गायन का प्रचार में आना।

ख्याल की उत्पत्ति प्रसंग में एक तथ्य ध्यान देने योग्य है यद्यपि इस पर अभी तक अधिक शोध कार्य नहीं हुए और वह है - ख्याल गीत का लोक-संगीत के अन्तर्गत एक विधा होना। आज भी राजस्थान तथा ब्रज के कुछ प्रदेशों में 'ख्याल' नामक लोक-गीतों की परम्परा प्राप्त होती है। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' नामक वार्ता साहित्य में एक गायिका द्वारा ख्याल और टप्पा नामक गीतों के गायन का उल्लेख है। अतएव इस शैली के निर्माण में तत्कालीन ख्याल-गीतों का योगदान रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

'ख्याल' शब्द अरबी भाषा का है। इसका अर्थ है कल्पना, विचार या तर्क। वर्तमान शास्त्रीय संगीत के गायन पद्धति में खयाल-गायन सबसे अधिक लोकप्रिय है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में खयाल का महत्व इतना अधिक हो गया है कि उसके बिना रागदारी संगीत की कल्पना ही नहीं की जा सकती। उसकी लोकप्रियता के चलते मध्ययुगीन गायन विधा ध्रुपद के अस्तित्व को काफी नुकसान पहुंचा। और तो और वाद्य यंत्रों में भी गायकी अंग के नाम से खयाल अंग का प्रचलन ध्रुपद अंग के वादन से अधिक दिखाई देता है।

गीत-रचना तथा गायन-शैली दोनों ही दृष्टियों से ख्याल का अपना स्थान है। खयाल के गीत को बंदिश कहा जाता है। कुछ समय पहले तक इसे चीज़ भी कहा जाता था। यह बहुत ही छोटा केवल दो या तीन पंक्तियोंवाला होता है और इसके दो ही भाग होते है – स्थायी और अंतरा। दसवीं शताब्दी के बाद से उत्तर भारत का बार बार मध्य एशियायी देशों के राजाओं द्वारा पराजित होने के कारण उत्तर भारत की भाषा में संस्कृत का वर्चस्व कम होने लगा और क्षेत्रीय भाषाओं का विकास होने लगा। विदेशी शासकों को संस्कृत के बदले क्षेत्रीय भाषा अधिक सुगम लगने लगी अतः उनके दरबारों मे गाने के लिए भी क्षेत्रीय भाषा मे लिखे गीतों का प्रयोग होने लगा। इसी के चलते ध्रुवपद के पद भी प्राचीन ब्रज भाषा में लिखा जाने लगा और अठारवी शताब्दी के आते आते खयाल विधा के लिए बंदिशों में भी हिन्दी और हिन्दी की करीबी क्षेत्रीय भाषा ब्रज, अवधि, आदि का प्रयोग होने लगा। दो तुक में बनी बंदिश को ही गायक अपनी कल्पना से

इतना अधिक सजा देते हैं कि वह गीत बार बार नए सौन्दर्य के साथ खिल उठता है। गायक की कल्पना की उड़ान जितनी ऊँची होगी, उतना ही ख्याल पुराना होते हुए भी नवीन बन जाता है।

ख्याल अधिकतर दो भागों मे गाए जाते हैं। प्रथम भाग में विलंबित या धीमे लय में विलंबित खयाल गाया जाता है जिसे बड़ा खयाल भी कहा जाता है। आज से सौ साल पहले विलंबित खयाल के प्रारंभ में ध्रुपद शैली की तरह राग का अनिबद्ध आलाप किया जाता था। आलाप के बाद विलंबित लय मे खयाल गाया जाता था जिसमे ताल में रहते हुए बंदिश के बोलों के साथ खुला विस्तार, लयकारी मोटे दाने की या गमक की बड़ी तानें आदि गाया जाता था। कालक्रम मे विलंबित खयाल का लय और भी ज्यादा विलंबित हो गया। उस्ताद अमीर खाँ को अति विलंबित खयाल का प्रणेता माना जाता है। परंतु दिल्ली तथा पटियाला घराने के गायक भी अति विलंबित लय में ही विलंबित खयाल गाते हैं। इस लय मे खयाल गाने के कारण प्रारम्भिक विस्तारित आलाप आजकल नहीं गाया जाता। विलंबित खयाल के बंदिश के साथ ही राग का विस्तार किया जाता है। प्रचलित शैली में प्रारंभिक छोटे से आलाप के बाद ही विलंबित खयाल की बंदिश उठा ली जाती है। बंदिश के स्थायी भाग को गाते हुए राग का मंद्र और मध्य सप्तक में आलाप करते हुए तार सा तक पँहुचते हैं। तत्पश्चात बंदिश के अंतरा भाग को गाया जाता है और अंतरे के मुखड़े के साथ तार सप्तक में राग का विस्तार किया जाता है। यह भाग गायक के क्षमता अनुसार ही निर्वाह होता है। अंतरे को सम्पूर्ण गा कर वापस स्थायी के बोल लिए जाते हैं और लय को सुविधा अनुसार बढ़ा कर स्थायी के बोलों के साथ तथा सरगम के साथ लयकारी की जाती है। फिर गायक के सुविधा अनुसार लय बढ़ाकर मोटी दानें की तान, गमक और हलक की तान, मेरुखण्ड की तान आदि गा कर विलंबित खयाल का समापन किया जाता है। इसके बाद द्रुत खयाल या छोटे खयाल की बंदिश गाई जाती है। द्रुत खयाल में राग का विस्तार नहीं होता। बल्कि द्रुत लय मे बंदिश के बोल या सरगम के साथ द्रुत लयकारी और तरह तरह की द्रुत गति की तानों की झड़ी गाई जाती है, जिस समय गायन अपनी चरम सीमा को प्राप्त करता है। खयाल गायन के इस शैली को सम्पूर्ण खयाल कहा जा सकता है। पर इस के अलावा यदि कोई छोटे पैमाने मे अर्थात कम समय के अंदर खयाल गाना चाहें तो प्रारम्भिक आलाप के बाद सीधे मध्यलय खयाल की बंदिश उठा कर भी गा सकते हैं। जहां सम्पूर्ण खयाल गाने में आधे घंटे से एक घंटे का समय लग सकता है वहीं मध्य लय खयाल गाने में पंद्रह से बीस मिनट लगता है। मध्यलय खयाल मे राग का विशद रूप से विस्तार न करते हुए लयकारी और तानों को प्रधानता दी जाती है। प्राय: संगीत सभाओं में एक सम्पूर्ण खयाल के बाद किसी दूसरे राग में मध्यलय खयाल गाया जाता है। अक्सर छोटे रागों में मध्यलय खयाल गाए जाते हैं।

खयाल विधा के विकास के साथ साथ इस विधा के साथ संगत के लिये अनुकूल वाद्यों और तालों का भी विकास हुआ। अब तक ध्रुपद के साथ खुले बाज की पखावज की संगत होती थी जो ध्रुपद के ओजपूर्ण गायन के अनुकूल वाद्य था। पर खयाल गायन में श्रृंगारिक गीतों के कारण गायन में माधुर्य और सूक्ष्म अलंकारों का प्रयोग अधिक होने लगा जिसके साथ पखावज की संगत सुनने में अच्छी नहीं लग रही थी। ऐसे मे ताल वाद्य के रूप मे तबला सामने आया। तबले के जन्म के बारे में फिर कई मत भेद है जिसे हम ताल वाद्य के अध्याय में अलग से पढ़ेंगे। यहाँ इतना ही समझना पर्याप्त होगा की खयाल के संगत के लिए तबले को ही चुन लिया गया। और सत्रहवीं शताब्दी के बाद जितनी भी गायन विधाएं प्रचलन मे आईं और जितने भी नवीन वाद्य यंत्र हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में आए उन सभी के साथ तबले की संगत को ही स्वीकार किया जाने लगा और इस प्रकार तबला ताल वाद्यों मे प्रमुख वाद्य बन गया। तबले के साथ साथ इस वाद्य मे बजाने योग्य तालों का भी विकास हुआ। खयाल मे प्राचीन तथा ध्रुपद में प्रयुक्त तालों की जगह नए तालों को ही प्रयुक्त किया गया। ये नए ताल मात्रा और विभागों के दृष्टि से अधिकतर प्राचीन तालों के समान ही थे पर इस में प्रयुक्त बोलों के कारण तालों में फर्क आ गया और खयाल जैसे लचीले विधा के लिए उपयुक्त ताल बन गए। जैसे एकताल को ही देखें, इसके मात्रा और विभाग चौताल के समान है जो ध्रुपद में प्रयुक्त होता है। पर इसके बोल अलग होने के कारण बजाने का तरीका अलग है जो तबले पर अच्छा लगता है। खयाल के साथ तबला और तानपूरा संगत वाद्य के रूप में अपरिहार्य हैं। इसके साथ गायक स्वर वाद्य के रूप में उपलब्धता और अपनी इच्छा अनुसार सारंगी या हारमोनियम भी लेते हैं।

वर्तमान समय में विलंबित खयालों में विलंबित एकताल, तिलवाड़ा, विलंबित तीनताल, झुमरा, आड़ा चौताल आदि तालों का प्रयोग किया जाता है तथा द्रुत खयालों में तीनताल और द्रुत एकताल का ही

सर्वाधिक प्रयोग होते दिखता है। मध्यलय खयालों में उक्त तालों के अलावा झपताल और रुपक ताल का भी प्रयोग होता है।

खयाल गायन में ध्रुपद की अपेक्षा सांगीतिक अलंकरण की गुंजाइश अधिक है। ध्रुपद का साहित्य और लयकारी इस गायकी को गंभीर बनाता है जबकी खयाल सांगीतिक रूप से अधिक सरस, मोहक और अन्य अलकारिक उपादानों के कारण अधिक लोकप्रिय है। जहां ध्रुपद में केवल गमक, मींड़ आदि ही अधिक सुनाई देती है वहीं राग के भाव को देखते हुए खयाल में मींड़ और गमक के साथ साथ खटका, मुरकी, और कई प्रकार की तानों की बहुलता है। इस विधा में भक्ति, श्रृंगारिक और काव्यात्मक भाव अधिक खिलता है।

ख्याल बंदिशों के प्रमुख रचयिता

खयाल की विधा को अल्प समय में ही इतनी प्रसिद्धी मिलने का एक महत्व पूर्ण कारण है इस विधा में मिलने वाले असंख्य बंदिशें। इसके गीत केवल दो तुक के होते हैं जिस कारण से बहुत अच्छे साहित्यकार न होते हुए भी आसानी से बंदिशें लिखना संभव हो पाता था। कई बंदिशों में तो केवल एक पंक्ति की स्थायी और एक पंक्ति की ही अंतरा पाई जाती है। पर केवल एक पंक्ति का साहित्य भी खयाल में राग के विस्तार के लिए पर्याप्त होता है। अर्थात इस विधा में राग का विस्तार शब्दों से अधिक महत्व रखता है। समूचे उत्तर भारत और दक्षिण भारत के भी कुछ प्रांतों में खयाल विधा की लोकप्रियता का यही एक कारण दिखता है क्योंकि इस विधा ने भाषा की अज्ञानता को जीत लिया है। ध्रुपद मे प्रयुक्त संस्कृत निष्ठ हिन्दी के कठिन पदों से अलग अठारवीं शताब्दी के सुल्तान मुहम्मद शाह के दरबारी गायक नियामत खाँ, (सदारंग) ने खयाल शैली में अनेक बंदिशों की रचना कर इस विधा को शास्त्रीय संगीत में प्रतिष्ठा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी ख्याल की अनेक रचनाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी से प्रचलित हैं। सदारंग स्वयं तानसेन के वंशज थे और इनकी अपनी तथा उनके वंशजों की गायकी ध्रुपद-गायकी थी। परन्तु संगीत में बदलते रुचि को ध्यान में रखकर उनके आश्रय दाता मुहम्मद शाह के प्रोत्साहन से उन्होंने अनेक ख्याल गीतों की रचना की जिसमें नए नए स्वर-सौन्दर्य के आविष्कार के लिए पर्याप्त स्थान था। इनकी बंदिशे सभी खयाल घरानों के लिए साँझा धरोहर है जिन्हें परवर्ती समय में पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे ने अत्यंत यत्न से अपने छे खंडों की क्रमिक पुस्तक मालिका में स्वरलिपि बद्ध कर आनेवाली पीढ़ीओं के गायकों लिए छोड़ गए हैं। कहते हैं कि ध्रुवपद की लयकारी और कव्वाली की तान, इन दोनों के सम्मिश्रण से ख्याल गायकी का निर्माण हुआ। कव्वाली से मिलती जुलती होने के कारण अनेक कव्वालों ने इस शैली को अपनाया। ग्वालियर घराने के आदि प्रवर्तक नथ्थन पीर बख्श मुख्यतः कव्वाल बच्चों के वंशज थे।

सदारंग के साथ मुहम्मद शाह के दरबार में खुसरो खाँ भी एक गायक हुआ करते थे जिन्होंने सदारंग के साथ कई बंदिशों की अदारंग के नाम से रचना की। इनकी बंदिशें भी क्रमिक पुस्तक मालिका में शामिल की गई है। इन दोनों के बाद खयाल शैली में कई संगीतज्ञों ने बंदिशों की रचना की है। उनमें से कुछ विशेष रचयिता हैं – पंडित विष्णु नारायण भातखंडे, विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, विनायक राव पटवर्धन, श्रीनारायण रातंजनकर, पंडित ओंकार नाथ ठाकुर, जगन्नाथ बुआ पुरोहित और हाल के पंडित रमाश्रय झा, विदुषी प्रभा अत्रे आदि। इनके अलावा भी सभी घरानों में कोई न कोई वाग्गेयकार हुए जिन्होंने अपनी शैली के अनुकूल खयाल बंदिशों की रचना की।

खयाल गायकी के विख्यात गायक

ख्याल शैली वर्तमान हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सर्वाधिक मानी हुई विधा है। विगत दो शताब्दियों में गायकों की प्रतिभा के अनुसार इस विधा में पर्याप्त विकास हुआ है। अठरवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में विभिन्न रियासतों के आश्रित गायकों ने इस विधा को अपनाकर अपनी अपनी शैली बनाई जिन्हे घराना कहा जाने लगा। जैसे दिल्ली, ग्वालियर, आगरा, जयपुर, रामपुर, सहस्वान, अतरौली, लखनऊ, किराना और पटियाला घराना आदि। बाद में इन घरानों में मेवाती, विष्णुपुर और बनारस घराना भी जुड़ा। इन घरानों के कुछ विख्यात कलाकारों ने इस विधा को लोकप्रिय बनाने मे महत्वपूर्ण योगदान दिए जैसे - लखनऊ घराने में बड़े मोहम्माद खाँ एवं उनके वंशज प्रसिद्ध ख्याल गायक रहे हैं। ग्वालियर घराने में नथ्थन पीर बख्श, हद्दू खाँ, हस्सू खाँ, रहिमन खाँ, निसार हुसेन खाँ, वज़े बुवा, बालक्कृष्ण बुवा, शंकर राव पण्डित, पं०

विष्णु दिगंबर पलुस्कर, ओंकारनाथ ठाकुर, विनायकराव पटवर्धन, नारायण व्यास इत्यादि प्रसिद्ध गायक हुए। दिल्ली घराने में तानरस खाँ, अली बख्श फतेह अली, संगी खाँ, मम्मन खाँ, चाँद खाँ जैसे श्रेष्ठ ख्याल गायक हुए हैं। आगरा घराने के फैयाज खाँ, विलायत हुसैन तथा श्री नारायण रातंजनकर अपनी रँगीली ख्याल गायकी के लिए प्रसिद्ध थे। जयपुर घराने के अल्लादिया खाँ, भूर्जी खाँ, रजव अली खाँ, केसर बाई केरकर, मोघूबाई कुर्डीकर प्रसिद्ध गायकों में हैं। किराना घराने में अब्दुल करीम खाँ, वहीद खाँ, सवाई गन्धर्व, हीराबाई बड़ोदकर तथा भीमसेन जोशी आदि गायक समस्त देश में प्रसिद्ध हैं। पटियाला घराने के गायकों में आशिक अली, इमानत अली, बाकर हुसेन, बड़े गुलाम अली खाँ, बरकत अली खाँ, सलामत खाँ तथा नजाकत खाँ के नाम सर्वप्रसिद्ध हैं|

खयाल शैली में गाए जानेवाले अन्य गीत

तराना –

तराना मध्यलय खयाल या द्रुत खयाल के अनुरूप एक प्रकार की बंदिश होती है जिसमें नोम, तोम, देरे, तनन, यललली, यालाली, दानी, तदानी आदि निरर्थक शब्दों का प्रयोग होता है। इस में कुछ घरानों में इन निरर्थक शब्दों के प्रयोग से ही तानों को गाने का प्रचलन है। और कुछ अन्य घरानों में आकार के तानें ही की जाती है। इस गीत प्रकार का उद्देश्य क्या था पता नहीं चलता। कुछ लोग कहते हैं की उच्चारण में सफाई लाने के लिये इन गीतों की रचना की गई। कुछ लोगों के मतानुसार ये फारसी और अरबी शब्दों के अपभ्रंश शब्द हैं। कुछ तरानों में रुबाइयों का प्रयोग भी होते दिखता है। तरानों का एक अलग ही आकर्षण है। महफिलों और सभाओं में इसकी काफी लोकप्रियता है। लोग फरमाइश कर के तराने सुनते हैं।

लक्षण गीत -

यह गीत भी खयाल शैली की एक रचना है। इस गीत में राग के लक्षणों का वर्णन होता है। ये विशेषत: नए विद्यार्थियों को राग लक्षण याद कराने के प्रयोजन से रचित किया गया। इस प्रकार के गीतों को साधारणत: सभाओं में नहीं गाया जाता परंतु कुछ कलाकारों ने कुछ बहुत ही सुंदर रचनाए बनाई हैं जिन्हे वे अपने कार्यक्रमों मे गाते हैं।

सरगम गीत -

यह गीत भी शिक्षार्थियों के लिए ही रचा जाता है। इन गीतों की रचना भी खयाल अंग से की जाती है। लक्षण गीतों की तरह सरगम गीत भी सभाओं मे नहीं गाया जाता, परंतु कभी कभी कुछ विशेष सुंदर रचना कलाकार अपने कार्यक्रम मे शामिल करते हैं।

त्रिवट और चतुरंग

त्रिवट एक ऐसा गीत प्रकार है जिसमें तीन प्रकार का अंग रहता है – पद या साहित्य, पाटाक्षर या ताल वाद्य के बोल और निरर्थक शब्द या तराने के बोल। इन गीतों में स्वरबद्ध मृदंग या पखावज के बोल और तराने के बोल गीत को साधारण श्रोताओं के लिये बहुत आकर्षक बना देता है। कभी कभी पाटाक्षर या तराने के बोल की बदले सरगम का प्रयोग भी किया जाता है।

चतुरंग में तीन के स्थान पर चार अंगों वाला गीत प्रकार है। इसमें पद साहित्य, पाटाक्षर, तराने के बोल और सरगम इन चार अंगों से यह गीत बनता है। साधारण खयाल गायकी में पाटाक्षर गायन, सरगम की झड़ी, और तराने के बोलों के कारण से गायन बहुत ही वैचित्रपूर्ण हो जाता है। परंतु ये दोनों ही गीत प्रकार श्रोताओं में लोकप्रिय तो हैं पर गायकों के लिए बहुत चुनौती पूर्ण होती है, क्योंकि हर गायक हर प्रकार के गीत विधा को नहीं निभा पाता।

याद रखने योग्य बातें

- वर्तमान हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पद्धति में खयाल-गायन सबसे अधिक लोकप्रिय है।

- उत्तर मध्यकालीन उत्तर भारत में मुगल सम्राटों के दरबारों में ही ख्याल का विकास हुआ।
- लिखित प्रमाण के आधार पर खयाल विधा का प्रचलन सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम भाग से ही माना जाना उचित होगा।
- खयाल के गीत को बंदिश कहा जाता है। कुछ समय पहले तक इसे चीज़ भी कहा जाता था।
- सम्पूर्ण ख्याल दो भागों मे गाए जाता है – विलंबित और द्रुत। दोनों भागों में अलग अलग बंदिशें गाई जाती है।
- सम्पूर्ण खयाल के अलावा मध्यलय खयाल भी स्वतंत्र रूप में गाया जाता है।
- खयाल के साथ तबला और तानपूरा संगत वाद्य के रूप में अपरिहार्य हैं। इसके साथ गायक स्वर वाद्य के रूप में उपलब्धता और अपनी इच्छा अनुसार सारंगी या हारमोनियम भी लेते हैं।
- वर्तमान समय में विलंबित खयालों में विलंबित एकताल, तिलवाड़ा, विलंबित तीनताल, झुमरा, आड़ा चौताल आदि तालों का प्रयोग किया जाता है तथा द्रुत खयालों में तीनताल और द्रुत एकताल का ही सर्वाधिक प्रयोग होते दिखता है। मध्यलय खयालों में उक्त तालों के अलावा झपताल और रुपक ताल का भी प्रयोग होता है।
- अठारवीं शताब्दी के सुल्तान मुहम्मद शाह के दरबारी गायक नियामत खाँ, (सदारंग) तथा खुसरो खाँ (अदारंग) ने सर्वप्रथम खयाल शैली में अनेक बंदिशों की रचना कर इस विधा को शास्त्रीय संगीत में प्रतिष्ठा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- खयाल अंग की अन्य गीत प्रकार हैं लक्षण गीत और सरगम गीत जिनका उपयोग अमूमन विद्यार्थियों को संगीत सीखाने के लिए किया जाता है।

अभ्यास प्रश्न

1. ख्याल के उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न मतभेदों के बारे में विस्तार से बताइए।
2. ध्रुपद और खयाल विधा में अंतर की व्याख्या कीजिए।
3. आपके मत से खयाल विधा की लोकप्रियता का कारण क्या हैं ?
4. ख्याल विधा में कौन कौन से ताल और संगत वाद्य प्रयोग किए जाते हैं ?
5. ख्याल विधा के अन्य गीत प्रकार क्या क्या हैं और उनकी विशेषताएं क्या हैं ?